ादिवासी આર્ટસ એન્ડ કોમર્સ, કૉલેજ સંતરામપુર

न-परिचय :- मुन्शी प्रेमचंद

:- MAKVANA ROSHNIBEN ATULBHAI

:- B.A. SEM-2

o:- 308

- Hindi **2022-23**

न्द का जीवन-परिचय

प्रेमचन्द्रजी हिन्दी के उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं।
- जुलाई सन् 1880 ई. में बनारस के एक छोटे
लमही में हुआ था। प्रेमचन्दजी का जीवन वस्तुतः
की एक किताब है। उन्होंने तो हमेशा मोटा खाया
पहना। वे गरीब बाप के बेटे थे और गरीबी की
ाया में उन्होंने स्कूल तथा कॉलेज की सीढ़ियाँ
की।

पिता एवं बचपन

प्रेमचन्दजी के पिता का नाम अजायबलाल था। उन्होंने
का नाम धनपतराय रखा और प्यार का नाम
लेकिन जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षण आया हो,
ने अपना नवाबी ठाट देखा हो अथवा 'धनपतराय'
सपना! प्रेमचन्दजी जीवनभर निर्धनता की चक्की में
। ऊपर से रोगिणी माँ मिली जो केवल सात
स्नेह देकर चल बसी।

ारिक जिम्मेदारी

ह वर्ष की अल्पायु में ही उन्हें गृहस्थी का बोझ
लए बाध्य होना पड़ा। पिता की मृत्यु और विमाता
के वैमनस्य ने उन्हें घर से विरक्त: सा बना
के इसी उतार-चढ़ाव के बीच प्रेमचन्द ने
न की नाव पार की। पेट की भूख ने तो
अपनी प्रिय पुस्तकों को बेचने के लिए बाध्य
ी बीच उनकी मुलाकात एक सहृदय हेडमास्टर से हुई,
न्द को 18 रुपये मासिक वेतन पर अध्यापक की
क पार दिया। उन्हें लगा जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। यह उनके जीवन का
तर प्राप्त करते चले गये और 1908 ई. में शिक्षा विभाग में वे 'सब इन्स्पेक्टर' के ऊँचे पद के लिए
मचन्दजी को पाठशालाओं के निरीक्षण के लिए गाँव गाँव घूमना पड़ता था। अतः इन्होंने भारतीय किसान
बहुत नजदीक से पहचाना था, उनके 'गोदान का होरी' इसी अनुभव की देन है। प्रेमचन्दजी सचमुच
ा के सफल चित्रकार थे।

न्दजी का कृतित्व :- एक मात्र काव्य-रचना को छोड़कर प्रेमचन्दजी ने प्रायः तत्कालीन सभी
पर अपनी कलम चलायी है। वे मूलतः कथाकार थे, जिसके कृतित्व को हम संक्षेप में
प्रस्तुत कर सकते हैं:
ास :- [1] प्रतिज्ञा (सन 1905-06) :- विधवा और अछूत समस्या लेकर लिखा गया है। [2] वरदान (सन
राजनीतिक-आंदोलन की झांकी प्रस्तुत की गयी है। [3] सेवासदन (1914) :- वेश्या-समस्या और निम्न
चित्र अंकित है। [4] प्रेमाश्रम (1908) :- भारतीय किसानों का शोषण और नये सुधारों को लेकर इसकी रचना
निर्मला (1923) :- दहेज और अनमेल विवाह की करुण कहानी है। [6] रंगभूमि (1914) :- औद्योगिक शोषण,
ंतरजातीय विवाह को इसमें स्थापित किया गया है। [7] कायाकल्प (1918) :- इसमें आत्मा के रहस्यों
या गया है। [8] गबन (1930) :- हिन्दु-परिवार के कुंठित जीवन का खात्मा है। [9] कर्मभूमि (1932) :-
रतु आंदोलन की प्रेरणात्मक कृति है। [10] मंगलसूत्र (1936 अपूर्ण) :- लेखक ने अपनी साहित्य साधना
को चित्रित करने का प्रयास था, किन्तु तब तक लेखक का रंग समाप्त हो चुका था।

ी संग्रह :- प्रेमचन्द ने 400 से ऊपर कहानियाँ लिखी हैं, जिन्हें 'मान सरोवर' के आठ भागों में संकलित
, 'सप्त सरोज', 'प्रेम पच्चीसी', 'प्रेम बतीसी', 'प्रेम-द्वादसी', 'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ' आदि अनेक
उनके कहानी संग्रह छपे हैं।

न्दजी का अवसान :- 'गोदान' इसके बाद ही लिखा गया, जिसे हम भारतीय ग्राम-जीवन की गीता कहते
सन 1936 में हुआ। जब 'मंगलसूत्र' के ताने बाने बुन रहे थे कि उनका शरीर रोग शैय्या पर पड़ गया
1936 को 'हंस' की चिंता करते करते उनके प्राणों का हंस उड़ गया। शिवरानी ने इसलिए कहा था
"हंस आज भी जीवित है, परंतु हंस का वह मोती कहाँ है?"

* रेडियो * → हिन्दी विभाग ←

कनाडा के वैज्ञानिक **रेगिनाल्ड फेंसडेन** ने **दिसम्बर, 1906** को रेडियो प्रसारण की शुरुआत की थी। रेडियो **जनसंचर** का महत्वपूर्ण यंत्र है। रेडियो का एक रूप **ट्रांजिस्टर भी** है। रेडियो का उपयोग **शिक्षण-कार्य** के लिए भी किया जाता है। रेडियो जहाज पुलिस सेना के वाहनों आदि में लगा होता है। **13 फरवरी** को "**वर्ल्ड रेडियो डे**" रूप में मनाया जाता है।

* टेलीविजन *

आज के आधुनिक समय में सभी अविष्कारों में से टेलीविजन एक महत्वपूर्ण अविष्कार है। टेलीविजन का अविष्कार **1994** में अमेरिकी वैज्ञानिक **जॉन लोगी बेयर्ड** के द्वारा किया गया है। भारत में **15 सितंबर 1959** को दूरदर्शन के स्थापना के साथ सर्वप्रथम टेलीविजन का इस्तेमाल **दिल्ली** में किया गया था। टेलीविजन को हिंदी में चलचित्र कहा जाता है।

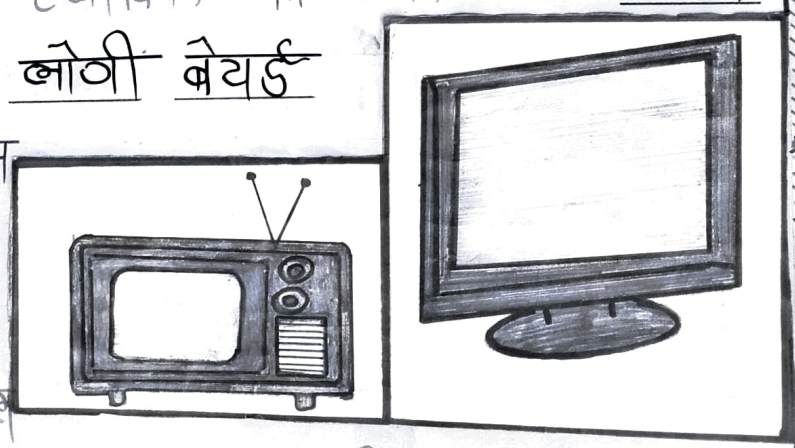

→ डामोर सत्यप्रकाश मनाभाई → मार्गदर्शक :
→ Sem : 6 B.A 2022-23 डॉ. विनोद वणकर

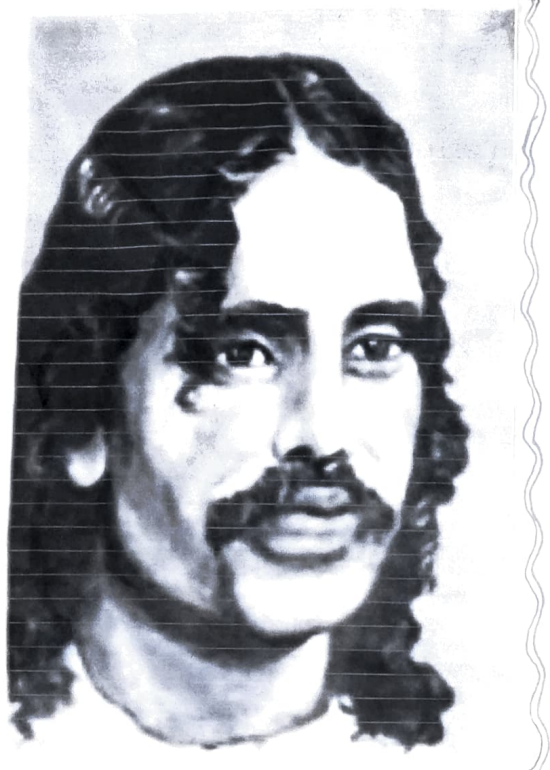

भारतेन्दु जी

भारतेन्दु हरिश्चंद जी का जीवन परिचय :
भारतेन्दु हरिश्चंद हिंदी साहित्य के प्रथम रचनाकार कहे जाते है।
भारतेन्दु जी का जन्म÷ 9 सितंबर 1850 को उत्तर प्रदेश के काशी मे हुआ था। इनके पिता का नाम÷" बाबु गोपाल चंद्र जी था। भारतेन्दु जी के पिता बहुत अच्छे 'कवि थे। हिंदी साहित्य के क्षेत्र मे भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने एक नई लहर ला दी। इसलिए हिंदी साहित्य मे आधुनिक काल के जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी को माना जाता है।

भारतेन्दु जी ने अपने लेखन के माध्यम से हर उस क्षेत्र को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है जिससे हमारे देश मे विकास की जरूरी है। इन्होंने अपनी प्रतिभा के माध्यम से हिंदी को आगे पहुँचाया है।
भारतेन्दु जी का जीवन काल बहुत कम आयु का था। इनकी ÷ मृत्यु 6 जनवरी 1885 को वाराणसी मे हुई। भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचनाएं भारतेन्दु हरिश्चंद जी ने हिंदी साहित्य मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दीया है।
भारतेन्दु जी के नाटक संग्रह- वैदक हिंसा हिंसा न भवति, भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चंद्र,
भारतेन्दु जी की कृतियां- प्रेम माधुरि, होली, वर्षा - विनोद, प्रेम मालिका, राग संग्रह, प्रेम तरंग,

मार्गदर्शक ÷

2022-23

* मार्गदर्शक : डॉ. विनोद वणकर

*नाम : आभीर रोहितकुमार . बी
आभीर सचिनकुमार . जे

* सेम : 6 (B.A)

* हिन्दी विभाग

कम्प्यूटर

2022-23

कम्प्यूटर का आविष्कार :-

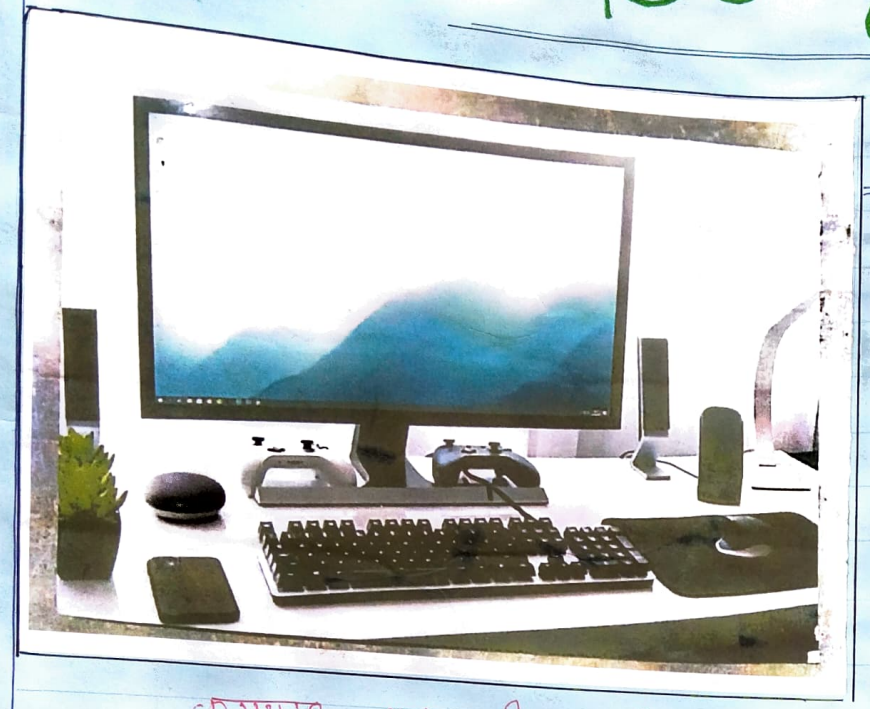

⟹ कम्प्यूटर का आविष्कार एक कम्प्यूटर का आविष्कार "चार्ल्स बैबेज" English Mathematician ने किया था।

⟹ चार्ल्स बैबेज को कम्प्यूटर के जनक भी कहा जाता है। "1822" में चार्ल्स बैबेज कुछ Complex Mathematical Operations को Perform करने के लिए एक Device बनाया जिसको Difference Engine का नाम दिया गया।

⟹ कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कम्प्यूट शब्द से हुई। जिसका अर्थ है कैलकुलेशन तो हम कह सकते है कि कम्प्यूटर गणना करने वाली एक मशीन है।

⟹ कम्प्यूटर को हिन्दी में 'संगणक' कहा जाता है।

⟹ कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर से मिलकर बनता है।

⟹ कम्प्यूटर के प्रकार :

(1) एनालॉग कम्प्यूटर

(2) डिजिटल कम्प्यूटर

(3) हाईब्रिड कम्प्यूटर

⟹ कम्प्यूटर के हार्डवेयर :- 'कीबोर्ड, माउस, मदरबोर्ड, हार्डडिस्क, प्रिंटर - ये सभी हार्डवेयर के उदाहरण हैं। कम्प्यूटर हार्डवेयर में कम्प्यूटर के भौतिक भाग जैसे कम्प्यूटर केस, कैबिनेट, सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू), मॉनिटर, माउस, कीबोर्ड, कम्प्यूटर डेटा स्टोरेज डिवाइस, ग्राफिक्स कार्ड, साउंड कार्ड, स्पीकर और मदरबोर्ड शामिल है।

जीवन परिचय :- "हरिवंश राय बच्चन"

NAME : PARMAR ROMABEN GOPALBHAI

Std :- B.A. SEM-2

Roll.no :- 319

Sub :- Hindi

2022-23

આદિવાસી આર્ટ્સ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ

पूरा नाम :- हरिवंश राय श्रीवास्तव उपाधि :- डॉ. (डाक्टरेट-कैम्ब्रिज) जन्म :- 27 नवम्बर, 1907 जन्मस्थान :- प्रयाग, इलाहाबाद मृत्यु :- 18 जनवरी, 2003 मृत्युस्थान :- मुंबई पेशा :- लेखक, कवि, प्राध्यापक माता :- सरस्वती देवी पिता :- प्रताप नारायण श्रीवास्तव पत्नी :- श्यामा बच्चन, तेजी बच्चन पुत्र :- अमिताभ बच्चन, अजिताभ बच्चन	प्रमुख रचनाएँ :- क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक, प्रवास की डायरी, मधुशाला, मधुकलश, मधुबाला, निशा-निमन्त्रण, एकान्त संगीत। भाषा :- हिन्दी शैली :- विविध शैलियों का प्रयोग साहित्य काल :- छायावादोत्तर काल विधाएं :- आत्मकथा, काव्य, कविता साहित्य में स्थान :- हिन्दी के सार्वाधिक लोकप्रिय कवि पुरस्कार :- साहित्य अकादमी पद्म भूषण, सरस्वती सम्मान

हरिवंश राय बच्चन का जन्म प्रयाग (इलाहाबाद) में सन् 1907 ई. में हुआ। इनके पिता प्रताप नारायण श्रीवास्तव गाँव- बाबूपट्टी जिला - प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में रहते थे। बच्चन के पूर्वज मूलरूप से अमोढ़ा (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। हरिवंश राय बच्चन हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध लेखक तथा कवि रहे थे। उन्होंने काशी और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की। कैम्ब्रिज विश्वविधालय से उन्होंने डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। कुछ - समय वे इलाहाबाद विश्व विधालय में अध्यापक रहे और कालांतर में दिल्ली में भारत के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ भी रहे। वहीं से उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। और कवि सांस की लंबी बीमारी की वजह से हरिवंश राय बच्चन की मृत्यु 18 जनवरी 2003 को मुंबई में हुई।

हरिवंश राय बच्चन हिन्दी कविता के छायावादोत्तर काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। - मधुशाला बच्चन की सबसे प्रसिद्ध कृति है। हिन्दी के सार्वाधिक लोकप्रिय कवियों में हरिवंश राय बच्चन का भी नाम आता है। हिन्दी सिनेमा जगत के प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन उनके बड़े पुत्र हैं।

*** हरिवंशराय बच्चन का साहित्यिक एवं कवि परिचय :-**

'हरिवंशराय बच्चन' उत्तर छायावादी काल के आस्थावादी कवि थे। उनकी कविताओं में मानवीय भावनाओं की सामान्य एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। सरलता, संगीतात्मकता, प्रवाह और मार्मिकता उनके काव्य की विशेषताएँ हैं और इन्हीं से उनको इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई।

आरम्भ में हरिवंश राय बच्चन' उमर खैय्याम के जीवन - दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। इसी ने उनके जीवन को मस्ती से भर दिया। मधुशाला, मधुबाला, हाला और प्याला को उन्होंने प्रतीकों के रूप में स्वीकार किया।

पहली पत्नी श्यामा की मृत्यु के बाद घोर विषाद और निराशा ने उनके जीवन को घेर लिया। इसके स्वर हमको निशा- निमन्त्रण' और एकान्त संगीत में सुनने को मिले। इसी समय से हृदय की गम्भीर - वृतियों का विश्लेषण आरम्भ हुआ। किन्तु 'सतरंगिणी' में फिर 'नीड़ का निर्माण फिर' गाया और जीवन का प्याला एक बार फिर उल्लास और आनन्द के आसव से छलकने लगा।

परवर्ती रचनाओं में कवि की वह भावावेशपूर्ण तन्मयता नहीं है, जो उनकी आरम्भिक रचनाओं में पाठकों और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करती रही। हरिवंश राय जी का 18 जनवरी 2003 में 95 वर्ष की आयु में मुंबई के एक अस्पताल में सांस की बीमारी की वजह से निधन हो गया। परंतु इनके निधन के बावजूद ये अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के दिलों में आज भी जिंदा हैं।

પ્રેમચંદ ગ્રંથાવલિ

સેવાસદન

जीवन परिचय - मुंशी प्रेमचन्द

जन्म 31 जुलाई जन्म स्थान लमही (उत्तर प्रदेश मृत्यु - 8 अक्टूबर 1936 मूलनाम - धनपत श्रीवास्तव उर्दु साहित्य नाम - नवाब राय प्रसिद्ध नाम प्रेमचन्द पिता - अजायबराय माता - आनंद दे (दुसरी पत्नी) संतान - श्रीपतराय, अमृतराय, कमला देवी

रचनाएं - 1. गोदान
2. कर्मभूमि
3. रंगभूमि

भाषा - मुंशी प्रेमचन्द ने शुद्ध हिन्दी बोली भाषा का प्रयोग अपनी भाषाओं में कि इन्होंने उर्दु संस्कृत भाषाओं मे किया है न सरल और सरस रूप में प्र किया हैं।

शैली - मुंशी प्रेमचन्द ने वर्णनात्मक, भावनात्मक, विवेचना शैली का प्रयोग किया हैं।

साहित्य मे स्थान - मुंशी प्रेमचंद को साहित्य जगत मे उपन्यास सम्राट के नाम से विभूषित किया गया है।

प्रस्तुत कहानी समाज का यथार्थ स्थिति को उद्घाटित करती है मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है।

कहानियाँ - प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं दो बैलो की कथा, पूस की रात, ईदगाह, दो सखियाँ, नमक का दरोगा, बड़े माता का ह्रदय, मिस पदमा कजाकी आदि। में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय हैं।

નામ : (૧) ગોધા પ્રિયંકાબેન જશવંતભાઈ   સેમ : ૨   વર્ષ : (૨૦૨૨-૨૩)

(૨) ગોધા રોશનીબેન વિક્રમભાઈ   મુખ્ય વિષય : સમાજશાસ્ત્ર   રોલ નં : ૬૦૨ ૬૦૩

धूमिल का जीवन परिचय।

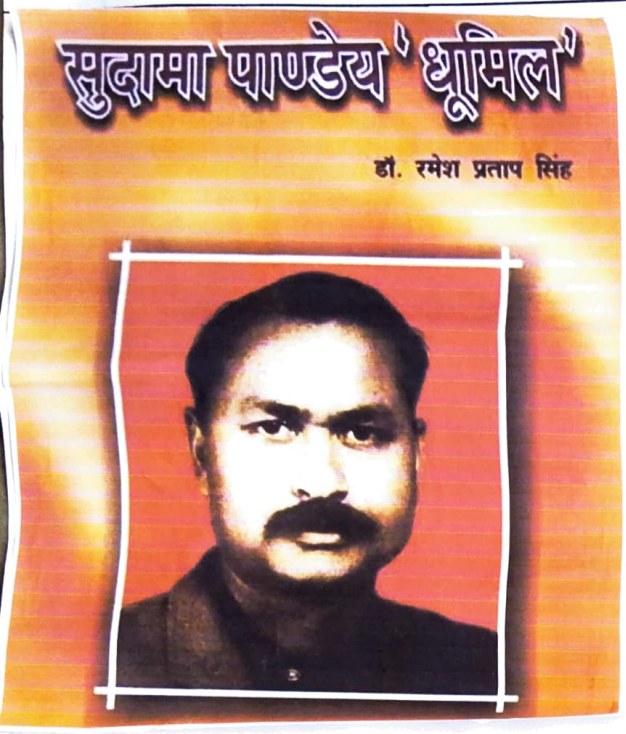

जन्म : ०९ नवम्बर १९३६

निधन : १० फरवरी १९७५

धूमिल का मूल नाम सुदामा पांडेय है। उनका जन्म ९ नवम्बर १९३६ को वाराणसी के निकट गाँव खेवली में हुआ था। उनके पूर्वज कहीं दूर से खेवली में आ बसे थे। धूमिल के पिता शिवनायक पांडे एक मुनीम थे व इनकी माता रजवंती देवी घरबार संभालती थी। जब धूमिल ग्यारह वर्ष के थे तो इनके पिता का देहांत हो गया। आपका बचपन संघर्षमय रहा।

धूमिल का विवाह १२ वर्ष की आयु में मूरतदेवी से हुआ। १९५३ में जब आपने हाइस्कूल उत्तीर्ण किया तो आप गांव के रहते वे पहले ऐसे व्यक्ति थी जिसने मैट्रिक पास की थी। आर्थिक दबावों के रहते वे अपनी पढ़ाई जारी न रख सके। स्वाध्याय स्वाध्याय व पुस्तकालय दोनों के बल पर उनका बौद्धिक विकास होता रहा। रोजगारी की तलाश 'धूमिल' को कलकत्ता ले आई। कहीं ढंग का काम न मिला तो लोहा ढोने का काम किया व मजदूर की जिंदगी को करीब से जाना। इस काम की जानकारी उनके सहपाठी मित्र तारकनाथ पांडे को मिली तो उन्होंने अपनी जानकारी में उन्हें एक लकड़ी की कम्पनी (मैसर्स तलवार ब्रदर्स प्रा. लि.) में नौकरी दिलवा दी। वहाँ वे लगभग डेढ़ वर्ष तक एक अधिकारी के तौर पर कार्यरत रहे। इस बीच अस्वस्थ होने पर स्वास्थ्य लाभ हेतु घर लौट आए। बीमारी के दौरान मालिक ने उन्हें मोतीहारी से गोलाही चले जाने को कहा। 'धूमिल' ने अपने अस्वस्थ होने का हवाला देते हुए इनकार कर दिया। मालिक का घमंड बोल उठा, "आई एम पेइंग फोर माई वर्क, नोट फोर योर हेल्थ।"

फिर क्या था? साढ़े चार सौ की नौकरी, प्रति धनकट मिलनेवाला कमीशन वही ए.डी.ए. धूमिल ने सबको लात लगा दी। इसी घटना से धूमिल पूंजीपतियों और मजदूरों के दृष्टिकोण व फासले को समझे। अब उनका जनवादी संघर्ष उनकी कविता में आक्रोश बन प्रकट होनेवाला था। धूमिल को हिंदी कविता के संघर्ष का कवि कहा जाता है।

१९५७ में 'धूमिल' ने काशी विश्वविद्यालय के औद्योगिक संस्थान में प्रवेश लिया। १९५८ में प्रथम श्रेणी से प्रथम स्थान लेकर विद्युत का डिप्लोमा लिया। वहीं विद्युत-अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। फिर वहीं नौकरी व पदोन्नति पाकर वे बलिया बनारस व सहारनपुर में कार्यरत रहे। १९७४ में जब वे सीतापुर में कार्यरत थे तो वे अस्वस्थ हो गये। अपनी स्पष्टवादिता व अक्खड़पन के कारण उन्हें अधिकारियों का कोपभाजन होना पड़ा। उच्चाधिकारी अपना दबाव बनाए रखने के कारण उन्हें किसी न किसी ढंग से उत्पीड़ित करते रहते थे। यही दबाव 'धूमिल' के मानसिक तनाव का कारण बन गया। अक्टूबर १९७४ को असहनीय सिर दर्द के कारण 'धूमिल' को काशी विश्वविद्यालय के मेडिकल कोलेज में भर्ती करवाया गया। डॉक्टर ने उन्हें ब्रेन ट्यूमर बताया। नवम्बर १९७४ को उन्हें लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल कोलेज में भर्ती करवाया गया। वहाँ उनके मस्तिष्क का ओपरेशन हुआ लेकिन उसके बाद वे कोमा में चले गए और बेहोशी की इसी अवस्था में ही १० फरवरी १९७५ को वे काल के भाजक बन गए।

धूमिल की साहित्यिक कृतियाँ :-

- संसद से सड़क तक
- कल सुनना मुझे (संपादक - राजशेखर)
- धूमिल की कविताएँ (संपादक - डॉ. शुकदेव)
- सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र (संपादक - रत्नशंकर)

धूमिल को मरणोपरांत १९७९ में साहित्य अकादमी पुरस्कार के सम्मानित किया गया।